[श्रीमती गीता भुक्कल]
पूरी तरह से हमें अपना हक मिले और अलग से हरियाणा प्रदेश की एस०जी०पी०सी० बने जो इन पर कंट्रोल रखे। सभापति महोदय, सामाजिक सैक्टर में काम करने वाले सभी हरियाणा के सिक्ख भाईयों की और पंजाबी भाइयों की भावनाओं को देखते हुए यह जरूरी है कि प्रदेश की अलग से एस०जी०पी०सी० बने जो अपने कार्य यहां पर करे, तो बहुत अच्छा होगा। चेयरमैन सर, मुझे अच्छी तरह से याद है कि मेरा जो कलायत हल्का है इसमें भी काफी सिक्ख रहते हैं तां मैं इक गल कहणा चाहवाँगी कि जेड़े वी साडे पंजाबी भरा ते सिक्ख भरा हैं उन्होंने हरियाणा विच पूरी तरां नाल सानू स्पोर्ट कीता है तां मैं वी ऐ गल दि स्पोर्ट कर दी हां कि साडे हरियाणा दा जेड़ा घोषणा पत्र सी साडी पार्टी ने औदे विच केहा सी कि सिक्खां दी इक वखरी एस०जी०पी०सी० बनाण बारे असी कोई निर्णय करांगे। तां सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा जी दी अध्यक्षता विच सरकार ने एक कमेटी वी बनाई तां उदी रिपोर्ट भी पेश होएगी। मेरी तां इस सदन तों इक गुजारिश है कि आज असी सारे साडे जिन्ने वी सिक्ख भरा हैं, जिन्ने भी पंजाबी ने उन्ना दे हकां वास्ते ते हरियाणा दे हक वास्ते ए जेड़ा असी नॉन ऑफिशियल रैजोल्यूशन लेकर आये हैं ओनू असीं पास करिये ते अपने सारे भरावां दा मान-सम्मान बढाईये ऐदे नाल ही मैं तुहाडा धन्यवाद कर दी हां, धन्यवाद।

श्री नरेश मलिक (हसनगढ़) : सभापति महोदय, भाई निर्मल सिंह जी जो प्रस्ताव लेकर आये हैं उसपर बोलने के लिए आपने मुझे समय दिया उसके लिए धन्यवाद। चेयरमैन सर, आज जो यह प्रस्ताव आया है यह हरियाणावासियों के लिए है। मैं कहता हूं कि यह प्रस्ताव सिक्ख भाइयों व पंजाबी भाईयों के लिए ही नहीं बल्कि मैं कहता हूं कि 36 बिरादरी के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है । जिस तरह अनेक सदस्यों ने बताया कि किस तरह से हमारे सिक्ख भाई या पंजाबी भाई जो इतनी श्रद्धा से गुरूद्वारों में पैसा एकत्रित करते हैं और उस पैसे को किस तरह से दूसरे लोग चाहे प्रकाश सिंह बादल या दूसरे लोग चाहे कोई भी हो, इसमें कहने में मुझे कोई हिचक नहीं है गलत इस्तेमाल करते हैं। चेयरमैन साहब, आज हरियाणा के विकास के योगदान के अन्दर चाहे वो एग्रीकल्चर हो, चाहे इन्डस्ट्रीज हो और दूसरे विकास के कार्य जिनके द्वारा हम हरियाणा को एक नम्बर का प्रदेश बनाने का सपना देख रहे हैं। उसमें मैं गर्व के साथ कह सकता हूं कि मेरे सिक्ख भाई हैं, पंजाबी भाई हैं,उनका सबसे बड़ा अहम रोल, अहम हिस्सा होगा। इस कौम ने आज से नहीं आजादी से पहले भी हमारी हर कौम की जिस तरह से रक्षा की है इस देश को भाईचारे की ताकत दी है इसके लिए हम सब उनके ऋणी हैं। आज हम यह नहीं कहते कि हरियाणा की एस०जी०पी०सी० अलग बनाने से हमारा पंजाब से भाईचारा टूट जायेगा। पंजाब अगर बड़े भाई की तरह हरियाणा के सिक्खों के साथ व्यवहार न करे और सौतेला व्यवहार करे तो यह ठीक नहीं है। पंजाब उनको हर तरह से सहयोग न करे तो इतने सालों से पंजाब का साथ हम कैसे दे रहे हैं। अभी मंत्री जी ने बताया कि हमारे यहां एस०जी०पी०सी० का कोई कॉलेज या कोई संस्था नहीं है। सबसे बड़े दुख की बात यह है कि आज पंजाब के तकरीबन हर गांव से हर परिवार से एक सदस्य अमेरिका, कनाडा या अन्य मुल्क में सैटल हैं। हरियाणा के सिक्ख भाइयों को, पंजाबी भाइयों को इस प्रकार से सबसे कम मौका मिला है। श्री निर्मल सिंह जी ने इस सदन में बहुत ही अहम प्रस्ताव रखा है। मैं इस प्रस्ताव पर कुछ और भी सुझाव देना चाहूंगा। सभापति महोदय, आपके माध्यम से मैं इस सदन से भी एक प्रार्थना करना चाहूंगा। जैसे आपको सभी सदस्यों से यह अपेक्षा है कि हम हाउस की कार्यवाही को अच्छे तरीके से चलने दें। चेयर के प्रति हमारा पूरा मान-सम्मान हो लेकिन चेयरमैन सर, विधायकों की रक्षा करना भी चेयर का फर्ज है।

श्री सभापति : मलिक साहब, क्या इससे ज्यादा रक्षा भी हो सकती है। पार्टी का एक ही आदमी है और वही सदन में खड़ा होकर बोल रहा है इससे ज्यादा चेयर से और क्या अपेक्षा हो सकती है।

श्री नरेश मलिक : चेयरमैन सर, क्या एक आदमी को बोलने का राईट नहीं होता है ?

श्री सभापति : इसी वजह से तो बुलवा रहे हैं। इस प्रकार की बात करने की नहीं है।

श्री नरेश मलिक : सभापति महोदय, मैं इससे पहले प्रस्ताव पास होने से पहले बोलना चाहता था।

श्री सभापति : मलिक साहब, अभी प्रस्ताव पास नहीं हुआ है अभी तो प्रस्ताव पर चर्चा चल रही है।

श्री नरेश मलिक : सभापति महोदय, मैं इस प्रस्ताव की बात नहीं कर रहा हूं लेकिन उस वक्त मुझे बोलने का मौका नहीं मिला। ठीक है, कोई बात नहीं। सभापति महोदय, हम आपसे यह भी गुजारिश करते हैं कि चेयर भी हमारा ध्यान रखने की कृपा करे। जहां तक सिक्ख गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी की बात है, (विघ्न) अभी बताया गया है कि सौ करोड़ रुपये सालाना की इन्कम इन गुरूद्वारों में होती है। सिक्ख कौम एक ऐसी कौम है जो पत्थर से भी पानी निकाल सकती है। यदि इनके पास एक रूपया भी न हो तो भी ये अपनी मेहनत और लगन से अपना लक्ष्य हासिल करने में सक्षम है। इनका जो अधिकार है वह इनको मिलना चाहिए और यहां पर जो प्रस्ताव आया है सरकार और इस सदन के सभी माननीय सदस्य इस प्रस्ताव का समर्थन करें। मैं इस सदन से एक और अनुरोध करूंगा कि अगर इसके साथ साथ एस०जी०पी०सी० जिसको हम मान्यता देने जा रहे हैं उस को आर्थिक मदद भी देनी चाहिए। सभापति महोदय, वित्तमन्त्री महोदय, इस समय सदन में उपस्थित नहीं हैं। मैं यह निवेदन करता हूं कि हरियाणा की अलग से बनने वाली एस०जी०पी०सी० को आर्थिक मदद देने के लिए बजट में प्रावधान करना चाहिए चाहे पचास करोड़, सौ करोड़ रुपये या जितनी भी राशि मुनासिब समझें उसका प्रावधान बजट में करना चाहिए। (विघ्न) मैं तो इस हक में हूं कि आर्थिक मदद करने का प्रावधान भी इस प्रस्ताव में होना चाहिए। (विघ्न)

श्री सभापति : मलिक साहब, आपका समय जितना बनता था उससे ज्यादा आप बोल चुके हैं इसलिए अब आप बैठें। आपने एक लाईन शुरू की थी वह छोड़ कर आप दूसरी लाईन पर आ गए।

श्री नरेश मलिक : सभापति महोदय, मुझे समय ही कितना मिला है। मैं कोई गलत बात नहीं कह रहा हूं इसलिए मेरा निवेदन है कि मुझे थोड़ा समय और बोलने की इजाजत देने की कृपा करें। मैं यही उम्मीद कर रहा हूं कि सरकार आर्थिक मदद दे तो ज्यादा बेहतर होगा। मेरा यह सुझाव है और यह सुझाव गलत नहीं है। सभापति महोदय, मेरा तो एक निवेदन है कि माननीय मुख्य मन्त्री जी तथा वित्तमन्त्री जी इसमें यह भी संशोधन कर दें तो इस कॉम्युनिटी के लिए बहुत अच्छी बात है। सभापति महोदय, अगर हम पक्ष में बोलें तो ठीक यदि हम विरोध में बोले तो हमें बैठने के लिए कह दिया जाता है। आपसे मेरा यह अनुरोध है कि मैं सरकार के खिलाफ नहीं बल्कि इस प्रस्ताव के पक्ष में बोल रहा हूं।

श्री सभापति : अगर आप बोलना चाहते हैं तो थोड़ी देर और बोल लें और यदि मैटीरियल खत्म हो गया हो तो दूसरी बात है।

श्री नरेश मलिक : सभापति महोदय, मेरे पास बोलने के लिए तो इतना मैटीरियल है जिसका कोई हिसाब नहीं है और इस वक्त तो जो मुद्दा है वह सिक्ख कॉम्युनिटी का हैं और जो प्रस्ताव आया है मैं उसके पक्ष में बोल रहा हूं। माननीय वित्त मन्त्री जी भी हाउस से चले गए हैं। हमने सिक्ख भाइयों के लिए डिलिमिटेशन कमीशन में कोशिश की कि विधानसभा चुनाव में कम से कम 4-5 सीट्स उनकी आ जाए तो बड़ी खुशी की बात होगी और हम इस बात का स्वागत करेंगे। (विघ्न) चेयरमैन सर, कम से कम सरकार के किसी मन्त्री ने इस बात को तो स्वीकार किया है कि डिलिमिटेशन कमीशन में सरकार का अहम रोल रहा है। जबकि हमारे पार्लियामैंट्री अफेयर्स मन्त्री महोदय कुछ दिन पहले तक कहते थे कि डिलिमिटेशन कमीशन की सारी कार्यवाही चौटाला जी के निर्देश पर हुई है लेकिन आज सरकार की तरफ से इस बात को स्वीकार किया गया है।

परिवहन मन्त्री (श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला) : चेयरमैन सर, ऑन ए प्वांयट ऑफ आर्डर मैं यह कहना चाहूंगा कि माननीय साथी श्री निर्मल सिंह जी जिस विषय को हाउस के सामने लेकर आए हैं वह बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है और उस पर चर्चा चल रही है। अगर इस प्रकार से हम बबलिंग करेंगे तो फिर गाड़ी का एक्सीडैंट हो जाएगा। मलिक साहब से कहें कि वे गाड़ी सड़क के ऊपर चलाएं बबलिंग न करें नहीं तो एक्सीडैंट हो जाएगा। (विघ्न)

श्री नरेश मलिक : चेयरमैन महोदय, जो आदरणीय वित्तमंत्री जी ने बोला था मैं उस बारे में ही बोल रहा हूं।

श्री सभापति : एस०जी०पी०सी० का विषय है आप उस पर ही बोलें । आप लाईन से हट रहे हैं।

श्री नरेश मलिक : चेयरपर्सन सर, मंत्री जी की तरफ से या सत्ता पक्ष के मेम्बर्ज की तरफ से एस०जी०पी०सी० के मुद्दे से हटकर बात कही जाए तो ठीक है। अगर हम कुछ कहें तो हमारा टाईम खत्म हो जाता है और हमारे बोलने से सत्ता पक्ष को मुश्किल हो जाती है।

श्री सभापति : आप एस०जी०पी०सी० के बारे में बात करें। लाईन से न हटें।

श्री नरेश मलिक : चेयरपर्सन सर, आप कहते हैं कि आप विपक्ष को बोलने का पूरा समय देते हैं।

चेयरपर्सन : आप मुद्दे पर बोलें।

श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला : चेयरमैन सर, डि-लिमिटेशन कमीशन है वह ज्यूडिशियल प्रक्रिया है इसका एस०जी०पी०सी० से क्या सम्बन्ध है। ये सदन में इधर-उधर की बात करके सदन का समय बर्बाद कर रहे हैं।

श्री नरेश मलिक : चेयरपर्सन सर, जब वित्तमंत्री जी बोलें तो ठीक है, अगर मैं वही बात कह रहा हूं तो उसमें क्या गलत है। सुरजेवाला जी, वित्तमंत्री जी ने जब यह बात कहीं थी तब आप सदन में नहीं थे।

श्री सभापति : आप जो बात कह रहे हैं वह न किसी मंत्री ने कही है और न ही किसी आदमी के हाथ की बात है।

श्री नरेश मलिक : मेरा कहना यह है कि इस प्रस्ताव में सरकार गुरूद्वारों को फाईनेंशिएल मदद करने के बारे में भी बजट में प्रावधान करे। धन्यवाद।

संसदीय सचिव (श्री दिलू राम) : चेयरमैन सर, श्री निर्मल सिंह जी ने जो प्रस्ताव सदन में एस०जी०पी०सी० से सम्बन्धित रखा है। मैं उसके लिए उनको बधाई देता हूं और उसका समर्थन करता हूं। चेयरमैन सर, मेरे हल्के में 50-60 हजार सिक्ख भाई रहते हैं। इलैक्शन से पहले और इलैक्शन के दौरान हमारा उनसे वायदा था कि अगर हमारी सरकार सत्ता में आएगी तो हम एस०जी०पी०सी० के बारे में सदन में रैजोल्यूशन लेकर आएंगे जोकि हमारी सरकार अपने वायदे के अनुसार लेकर भी आई है। हमारे सिक्ख भाई मुझे इस बारे में मिलते रहे हैं और मैं उनको विश्वास दिलाता रहा हूं कि हमारे मुख्यमंत्री जी ने जो आपसे वायदा किया है वह जरूर पूरा होगा। उसी वायदे के अनुसार आज सदन में श्री निर्मल सिंह जी यह प्रस्ताव लेकर आए हैं। आज तक सिक्ख भाइयों के साथ ज्यादती होती आई है और जब भी ये एस०जी०पी०सी० की मीटिंग में जाते थे तो एस०जी०पी०सी० के पंजाब के सदस्यों को तो ए०सी० कमरे रहने के लिए दिए जाते थे और हमारे हरियाणा के सिक्ख भाइयों को नॉन-ए०सी० कमरे में ठहराया जाता था । पंजाब की एस०जी०पी०सी० ने सिक्ख धर्म को अखाड़ा बना रखा है। हमारे हरियाणा के एस०जी०पी०सी० के सदस्यों ने हरियाणा सरकार पर जो विश्वास जताया है। मेरा आपके माध्यम से कहना है कि उनको उनका हक मिलना चाहिए क्योंकि जुर्म सहने वाला भी उतना ही दोषी है जितना जुर्म करने वाला दोषी होता है। हमारे हरियाणा के सिक्ख भाई 41 सालों से एस०जी०पी०सी० के सदस्यों का जुर्म सहते आ रहे हैं। पंजाब की एस०जी०पी०सी० ने कुछ भी फैसला इम्पलीमैंट करवाना होता है तो वे सीधे ही फतवा दे देते हैं। रैजोल्यूशन अपने आप करते थे और मोहर अकाल तख्त की लगवा देते थे। मैं अपने हल्के से 6 इलैक्शन लड़ चुका हूं इसलिए मुझे पता है कि जितने भी मेरे सिक्ख भाई थे वह उस फतवे को मानते थे। लेकिन जब उन पर ज्यादतियां हुईं तो उन लोगों ने यह महसूस किया कि अब वाकई हमारे ऊपर ज्यादतियां हो रही हैं और हमें हमारा हक भी नहीं मिल रहा है इसलिए ही चेयरमैन सर, अलग एस०जी०पी०सी० बनाने की मांग उठी है। चेयरमैन सर, मेरे हल्के में 5-6 गुरूद्वारे हैं और उनकी आमदनी भी बहुत ज्यादा है । किसी गुरूद्वारे के पास 200 किल्ले जमीन है, किसी के पास 250 किल्ले जमीन है तो किसी के पास 300 किल्ले जमीन है लेकिन वहां उनके सेवक दस रुपये भी नहीं छोड़ते हैं सारा हिसाब करके हर महीने सारी आमदनी लेकर चले जाते हैं। इसलिए आज जो यह रैजोल्यूशन लाया गया है। मैं इसका समर्थन करता हूं ताकि हमारे सारे सरदार भाइयों को उनका हक मिले। चेयरमैन सर, मैं इन्ही शब्दों के साथ आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे इस रैजोल्यूशन पर बोलने का मौका दिया।

स्वास्थ्य मंत्री (बहिन करतार देवी) : धन्यवाद चेयरमैन सर, आपने एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर मुझे अपने विचार प्रकट करने का मौका दिया है। मैं भाई निर्मल सिंह जी का आमार व्यक्त करना चाहती हूं कि वे समय की आवश्यकता को समझते हुए यह रैजोल्यूशन लेकर आए हैं हमारे यहां के जो गुरूओं को मानने वाले भाई हैं उनकी भावनाओं को देखते हुए आज नॉन ओफिशिएल प्रस्ताव लाया गया है। मेरे से पूर्व के वक्ताओं ने विशेष तौर पर पार्लियामैंट्री अफेयर्ज मिनिस्टर साहब ने और ऐगीकल्चरल मिनिस्टर साहब ने बहुत अच्छी जानकारी इस बारे में दी है। इस जानकारी

[बहिन करतार देवी]

से साफ जाहिर है कि लोगों के साथ बिल्कुल ही पक्षपात हो रहा है और उनको कोई भी अधिकार नहीं दिया जा रहा है केवल उनसे काम ही लिया जा रहा है। चेयरमैन सर, आज हर एक नागरिक अपने अधिकारों के लिए जागरुक है। जहां तक सिक्ख धर्म की बात है वह केवल एक प्रान्त का नहीं है। अगर सच में देखा जाए तो यह पूरे हिन्दुस्तान की बात है गुरू तेग बहादुर का जो बलिदान हुआ है वह सोचकर देखें कि क्यों हुआ है। जब कश्मीर के पंडित उनके पास गए थे और उनसे मुस्लिम शासक द्वारा उन पर किए जा रहे अत्याचारों से बचाने के लिए कहा था तो उस समय गुरू गोबिन्द सिंह जी की उम्र बहुत कम थी। उस वक्त उनके पिता जी ने कहा था कि अब ऐसा समय आ गया है कि किसी न किसी महापुरूष को अपना बलिदान देना पड़ेगा। इस पर गुरू गोबिन्द सिंह जी ने कहा कि आपसे महान और कौन होगा इसलिए आपको ही बलिदान देना चाहिए। चेयरमैन सर, दिल्ली जाने के लिए वे जहां जहां से निकलते हुए गए वहां वहां पर उनकी स्मृति में बहुत से गुरूद्वारे बने हुए हैं। हमारा जिला भी इससे अछूता नहीं है हमारे जिले में भी चेयरमैन साहब आपके हल्के में लाखन माजरा में एक गुरूद्वारा पड़ता है, यह गुरूद्वारा बहुत ही प्रसिद्ध है। आज भी वहां पर उनको याद किया जाता है। गुरू तेग बहादुर जब दिल्ली गये थे तो वे वहां पर रूके थे। चेयरमैन सर, मेरा हल्का तो ऐसा है जहां पर पाकिस्तान से 14 गदि्दयां लायी गयी थीं ये जैसी वहां पर थीं वैसी ही उसी रूप में आज भी हल्के के गुरूद्वारों में और मन्दिरों में बनी हुई हैं और आज भी रागी बड़े फख्र से गाते हैं कि श्री तेग बहार्दुर हिन्द की चादर । जो लोग इनको केवल पंजाब की चादर बनाना चाहते हैं वह ऐसा करके उनका मान सम्मान बढ़ाना नहीं बल्कि घटाना चाहते हैं। जब हरियाणा के सिक्खों की इस तरह की आवाज आयी है कि हरियाणा के सिक्ख अपनी अलग एस०जी०पी०सी० बनाना चाहते हैं तो उनकी सहर्ष इस बात को मान लेना चाहिए था क्योंकि धर्म कोई दबाव का विषय नहीं है बल्कि यह तो बिल्कुल सबकी अंतरप्रेरणा की बात है। जो दिल से मानते हैं उनको वहां से कोई हटा नहीं सकता है। जिस तरह से हमारे गुरूद्वारों की आर्थिक पोजीशन बतायी गयी है उसको अगर हम देखें तो यहां पर भी अलग एस०जी०पी०सी० बनायी ही जानी चाहिए। हमें पूरा विश्वास है कि जब ऐसा हो जाएगा तो हमारे जो दसवें गुरू गोबिन्द सिंह जी का फरमान है कि शुभ कर्मण से कबहुं न डरूं देह शिवा वर मोहे इह। शुभ कार्यों के लिए हमारी जो भी श्रृद्धा की, आस्था की आमदनी है वह प्रदेश के उत्थान के लिए खर्च होगी और इससे भाईचारा बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। मेरे जो भाई इसको एक ही तरफ ले जाना चाहते हैं, चन्द लोगों के बीच में ही इसको सीमित करना चाहते हैं। वे नहीं जानते कि गुरू गोबिन्द सिंह तथा हमारे सब गुरूओं के सन्देश गुरु ग्रन्थ साहब में लिखे हुए हैं। उसमें कौन सा महान संत हैं जिसकी वाणी उस्में नहीं है। कबीर दास जी की, रविदास जी की, बाबा फरीद जी की और बुल्ले शाह की भी वाणी उसमें है। सभी धर्मों के मालिकों ने जो संदेश दिया वही संदेश सिक्ख गुरूओं ने दिया। इसमें इतनी उदारता चाहिए कि संकुचित मन और संकीर्णता का इसमें कोई प्रश्न ही पैदा नहीं होता। कहने के लिए तो बहुत कुछ कहा जा सकता है। सोनीपत के पास बड़खालसा के नाम से गुरुद्वारा है उसका यह नाम क्यों रखा गया है क्योंकि वहां पर ऐसे बहुत सारे लोग थे जो अपना सर कटाने के लिए तैयार थे। यही बात नहीं गुरुद्वारा सीस गंज गुरु साहब के सीस लेने वाले की याद में आज तक कहा जाता है कि रंग रेटे गुरु के बेटे। यह और जातियों में भी नयी चीज नही है। गुरुओं का संदेश पूरी मानवता के कल्याण के लिए है। जो भी धर्म को मानने वाला है उसका फर्ज बनता है वह समूची मानवता के लिए ऊंचे से ऊंचा कार्य करे, तभी हम उनके अनुयायी कहलाने का अधिकार

रखते हैं। इसके लिए मैं फिर से निर्मल सिंह जी को बधाई देती हूं और यह प्रार्थना भी करती हूं कि इस बात की आज बहुत जरूरत है। हरियाणा के लिए अलग से शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी बननी चाहिए ताकि हमारे सिक्ख भाई भी अपनी आजादी से निर्णय ले सकें और अपने पास जो पर्याप्त साधन हैं उनका इस्तेमाल अपने बच्चों की पढ़ाई के लिए, गरीब लोगों की मदद के लिए कर सकें साथ ही गुरुओं का संदेश घर-घर तक पहुंचे और उनका सम्मान हरेक के दिल में बढ़े। मैं ज्यादा समय न लेते हुए चेयरमैन साहब का धन्यवाद करती हूं और यह प्रार्थना भी करती हूं कि बड़ी खुशी के साथ बहुत जल्दी इस प्रस्ताव को पास कर दिया जाए।

शिक्षा मंत्री (श्री फूल चंद मुलाना) : चेयरमैन साहब, त्वाडा बोहत-बोहत धन्यवाद। चेयरमैन साहब, निर्मल सिंह जी बहुत ही महत्वपूर्ण रेजोल्यूशन सदन के सामने लाए हैं चट्ठा साहब ने तो कुछ नहीं कहा । उन्होंने रिर्फ एक रूपरेखा सदन के सामने रखी। रणदीप सिंह सुरजेवाला पार्लियामैंट्री अफेयर्ज मिनिस्टर हैं उन्होंने सभी तथ्यों से सदन को अवगत करवाया। कानूनी पहलू भी सदन के नोटिस में लाए। इस महत्वपूर्ण विषय पर खेद का विषय यह है कि जिन लोगों का हरियाणा प्रदेश के हितों से कोई सरोकार नहीं है वे आज सीटों पर नहीं है, उनकी सीटें खाली पड़ी हैं। चेयरमैन महोदय, जब जात-पात का जहर फैलाना हो या जाति पाति के आधार पर वोट प्राप्त करने हों तब वे लोग हमेशा आगे रहते हैं। आज उनकी गैर-हाजिरी हमको और सारे सदन को अखर रही है। चेयरमैन साहब, शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी केवल मात्र केशधारी सिक्खों के लिए नहीं है। सिक्ख वह है जो गुरु की शिक्षा को माने। सिक्ख भी दो प्रकार के हैं। एक सहजधारी और एक केशधारी । हमारे यहां पर दोनों तरह के हैं। आप देहात में देखते हैं हमारे बहुत सारे सहजधारी सिक्ख जब कोई भी फंक्शन अपने घरों में करवाते हैं तो गुरू ग्रन्थ साहब का प्रकाश करवाते हैं। हरियाणा में बहुत सारे सिक्ख हैं। हम भी गुरू की शिक्षा को मानते हैं हम भी सभी सिक्ख हैं। भाई निर्मल सिंह जो प्रस्ताव इस सदन में लेकर आये हैं यह हमारी भावनाओं का प्रतीक है। चट्ठा साहब ने बताया कि हरियाणा में 100 गुरुद्वारे हैं जिनमें से 52 गुरुद्वारे तो एस०जी०पी०सी० के तहत हैं और 48 गुरूद्वारे ऐसे हैं जो उन्होंने अपने चहेतों को सौंप रखे हैं कि कमाओ खाओ और मौज करो। गुरूवाणी तो यह कहती है कि **"कीरत करो, नाम जपो और वण्ड छक्को।"** हरियाणा के गुरूद्वारों से 100 करोड़ रुपये की आमदनी होती है लेकिन उसमें से एक भी पैसा हरियाणा में नहीं लगता। अभी रणदीप सिंह सुरजेवाला जी ने बताया कि पंजाब में कितने ही मैडीकल कालेज, कितने ही दूसरे कालेजिज हैं, कितने ही स्कूल बनाये हैं लेकिन अम्बाला में एक खालसा स्कूल था उसको भी सरकार टेक ओवर करने जा रही है। क्योंकि उस स्कूल को बन्द कर दिया गया था। हमारे सिक्ख भाइयों को भरमाया गया कि शाहबाद में एक मीरीपीरी नामक मैडीकल कालेज बनाया जा रहा है लेकिन जिस संस्था के नाम से वह कालेज बनाया जा रहा है उस संस्था को आज तक एन०ओ०सी० इश्यू नहीं हुआ है। कैसे कह सकते हैं कि जो एस०जी०पी०सी० बादल साहब के कब्जे में है वह हरियाणा के सिक्खों के हितों का ध्यान रखेगी। अभी जो एस०जी०पी०सी० का चुनाव हुआ उसमें हरियाणा के सिक्खों ने अपनी आस्था व्यक्त की और कहा कि हम अपने हरियाणा के सिक्खों को एस०जी०पी०सी० का मैम्बर बनायेंगे उसमें 11 में से सात मैम्बर हरियाणा के चुने गये जिनकी आस्था बादल ग्रुप में नहीं थी क्योंकि सभी दुखी थे। हरियाणा में बहुत से गुरूओं का आगमन हुआ है। गुरू गोबिन्द सिंह, गुरू हरकिशन और गुरू तेग बहादुर तो जीवित भी हरियाणा से गए और जब उनका मृत शीश लाया गया तो वह भी हरियाणा की भूमि में लाया गया था। हरियाणा भी गुरूओं की भूमि है। हम सभी भी गुरू के सिक्ख हैं। सिक्ख वह है जो गुरू की

[श्री फूल चंद मुलाना]

शिक्षा को माने। चाहे वह केशधारी है और चाहे सहजधारी है। हमारे हरियाणा के सिक्खों की भावनाओं के साथ लोकदल के साथियों ने खिलवाड़ किया है। आज भी आपने देखा होगा कि जब यह रेजोल्यूशन आया वे इतने तेजी से सदन से भाग गये कि कभी स्पीकर साहब, उनको इस रेजोलूशन पर बोलने के लिए उनका नाम न ले लें। एक के बाद एक लाईन लगा दी। उनको पता था कि यह रेजोलूशन आयेगा। बादल साहब के पास यह खबर जायेगी कि लोकदल के सदस्य हाउस में बैठे थे तो वे बुरा न मान जाएं इसलिए हाउस से चले गए। सभापति महोदय, जैसा कि मैंने कहा गुरू गोबिन्द सिंह जी का नैनीहाल भी चौधरी निर्मल सिंह जी के हलके में हैं। उस गांव का नाम है, लखनौर साहिब वहां पर आज भी वह गुरूद्वारा बना हुआ है। और जिस गेंद से गुरू गोबिन्द सिंह जी बचपन में खेला करते थे वह आज भी वहां रखी हुई है, छोटे छोटे तीर भी रखे हुए हैं और जिन खिलौनों से वे खेला करते थे वे भी आज वहां पर रखे हुए हैं। उनकी मां हरियाणा की थी। उसके बाद जब मुगल हिमाचल के राजाओं से मिलकर गुरू गोबिन्द सिंह जी से लड़ाई लड़ रहे थे। उस समय गुरू गोबिन्द सिंह जी को जब आनन्दपुर साहिब से निकलना पड़ा तो उन्होंने पौन्टा साहिब में अपना स्थान निश्चित किया लेकिन वहां भी मुगलों ने हिमाचल के राजाओं से मिलकर उन पर अटैक करवा दिया। तब जमना पर एक तरफ हिमाचल के राजाओं की फौज थी और दूसरी तरफ गुरू गोबिन्द सिंह जी की फौज थी, सढौरा के पीर बुधुशाह के बेटों ने गुरू गोबिन्द सिंह जी का साथ दिया और उनके दो बेटे शहीद हुए। जब भंगाणी की लड़ाई हो रही थी उस समय गुरू नानक देव जी का जन्म दिन आ गया और भंगाणी की लड़ाई के कारण गुरू गोबिन्द सिंह जी गुरू नानक देव जी का जन्म दिन नहीं मना सके। लेकिन लड़ाई जीतने के बाद कपालमोचन के स्थान पर गुरू गोबिन्द सिंह जी आये और 52 दिन तक वहां वास किया। उस समय कपालमोचन में गुरू नानक देव जी का जन्म दिन उन्होंने मनाया। यही कारण है कि आज के दिन भी उसी तारीख को गुरू नानक देव जी का जन्म दिन मनाया जाता है। सभापति महोदय, नाडा साहिब में गुरू गोबिन्द सिंह जी रहे। अभी चड्ढा साहब बता रहे थे कि नाडा साहिब में एक रविवार के दिन की इन्कम 50 लाख रुपये है लेकिन उसमें से कितना पैसा हमारे यहां लग रहा है यह सबको मालूम है। सारा पैसा पंजाब में लग रहा है और हरियाणा प्रदेश के सिक्ख भाइयों के साथ भेदभाव हो रहा है। सभापति महोदय, हरियाणा प्रदेश में जो भी गुरू ग्रंथ को या गुरूओं को मानने वाले लोग हैं उनके साथ भेद-भाव हो रहा है और हद देखिये वे लोग अपनी स्टेट को राईपेरियन स्टेट कहते हैं क्योंकि उनका मानना है कि पानी उनके यहां से गुजरता है। अरे तो भाई जी०टी० रोड़ हमारी स्टेट से जाती है। यदि पानी उनकी स्टेट में से जाता है तो क्या उस पर उनका अधिकार हो गया इस हिसाब से तो पानी पर उनका अधिकार है जहां से पानी निकलता है। वह तो मेरे ख्याल से पहले चीन से आयेगा और चीन के बाद फिर हिमाचल प्रदेश में आयेगा तो फिर पंजाब में आयेगा इस प्रकार से रायपेरियन का हक तो पानी पर चीन का होना चाहिए। सभापति महोदय, इस प्रकार की बेतूकी बातें करने वाले कहें कि हम धर्म के ठेकेदार हैं तो अच्छी बात नहीं लगती है। धर्म को मानने वाले तो पूरे देश में और सभी प्रांतों में हैं। हरियाणा में भी हैं और पंजाब में भी हैं लेकिन एक व्यक्ति किसी विशेष धर्म का ठेका ले ले यह अनुचित बात है। यह कोई उचित बात नहीं है कि सिक्ख धर्म को मानने वाले हमारे लोगों को उनके अधिकारों से वंचित रखा जाये। सभापति महोदय, हमारा भी हक है, जब हम 100 करोड़ रुपये की सालाना आमदन दे रहे हैं तो उसमें से 90-95 करोड़ रुपये हमारे यहां खर्च होना चाहिए। अगर पांच-दस करोड़ रुपये वे अपने खर्चे के

लिए ले जायें तो कोई बात नहीं । यह समय की मांग है कि हमारे प्रांत की जो इन्कम है वह हमारे प्रांत में ही लगनी चाहिए। सभापति महोदय, मैं मुख्यमंत्री महोदय को बधाई देता हूं कि उन्होंने भी अपने आपको इस भावना से जोड़ा है । निर्मल सिंह जी जो यह प्रस्ताव लेकर आये हैं इस पर सभी साथियों ने अपने सकारात्मक विचार रखे हैं और दूसरे सदस्य भी रखेंगे। रणदीप सिंह सुरजेवाला जी जो हमारे पार्लियामैंट अफेयर्ज मिनिस्टर हैं, बीरेन्द्र सिंह जी और चड्ढा साहब ने सारे तथ्यों से पूरे सदन को अवगत करवाया है। इन तथ्यों को देखकर लगता है कि हमारे साथ तो धोखा ही होता रहा है। इसलिए मैं भी सभी साथियों की भावनाओं से अपने आपको जोड़ते हुए यही कह सकता हूं कि हम सच्चाई के साथ चलेंगे। जैसा कि गुरू गोबिन्द सिंह जी ने भी कहा था कि-

देह शिवा वर मोहे ईहे, शुभ कर्मण ते कब हूं न डरूं,
न डरूं अरसों जब ही जब रण में जूझ मरूं,
निश्चय कर अपनी जीत करूं।

सभापति महोदय, मुझे पूरा विश्वास है कि सदन की भावना को मानते हुए जब आप यह प्रस्ताव पास करेंगे तो केन्द्र सरकार भी उससे प्रभावित होकर इस प्रस्ताव को पास करेगी तथा हरियाणा प्रदेश की अलग से एस०जी०पी०सी० बनेगी। धन्यवाद।

Shri Parmvir Singh (Tohana) : Chairman Sir, formation of separate SGPC, will be a very big step towards the welfare of the Sikh Community in Haryana so that the money donated religiously by them in the Gurudwaras can be spent on them. SGPC in Punjab is exploiting the resources of Haryana Gurdwaras.There is no doubt about it that SGPC of Punjab is in the clutches of Mr. Parkash Singh Badal. Most of the Sikhs in Haryana are doing agriculture and they are dependent on agriculture and he talks of stopping the flowing of water to Haryana. What he is thinking of the Sikhs in Haryana who are mostly dependent on agriculture . How can he be the sincere to the Sikhs in Haryana. He is not sincere towards the Sikhs in Haryana who are entirely dependent on Agriculture. It is a big doubt and I, therefore, strongly support the resolution moved by Shri Nirmal Singh for the formation of separate SGPC for Haryana. It will go a long way towards the welfare of the Sikh Community in Haryana and I again strongly support the resolution moved by Shri Nirmal Singh.

श्री जयसिंह राणा (नीलोखेड़ी) : सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने के लिए समय दिया उसके लिए धन्यवाद। आज जो यह गैर सरकारी प्रस्ताव भाई निर्मल सिंह जी सदन में लेकर आये हैं कि शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी हरियाणा की पंजाब से अलग हो यह एक बड़ा महत्वपूर्ण प्रस्ताव है। इस देश के इतिहास में सिक्ख धर्म का बहुत बड़ा योगदान है। सिक्ख धर्म की स्थापना वैसे ही नहीं की गई थी गुरू गोविन्द सिंह जी ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए सिक्ख धर्म की स्थापना की, एक फौज को खड़ा किया जो कि हिन्दुओं की रक्षा कर सके। आज उस धर्म के माध्यम से राजनैतिक दल राजनीति करे यह बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी जो सांझी है दोनों प्रदेशों की और वो 100 करोड़ रुपये इकट्ठे करके हरियाणा प्रदेश से ले जाये और जिसका एक परसेंट भी हरियाणा प्रदेश में न लगे। (इस समय अध्यक्ष महोदय पदासीन हुए) अध्यक्ष महोदय, मेरे से पूर्व बोलते हुए साथियों ने कहा कि हरियाणा के सिक्खों और पंजाबियों के साथ बड़ा भारी अन्याय है। मैं तो यह सकता हूँ कि पूरे, प्रदेश के सभी लोगों के साथ अन्याय है क्योंकि जब

[श्री जयसिंह राणा]

हरियाणा प्रदेश की अलग एस०जी०पी०सी० बनेगी और यह पैसा जो यहाँ हरियाणा प्रदेश में लगेगा जो भी संस्थाएं यहाँ पर बनेगी चाहे वो शिक्षा के लिए हो, चाहे कोई हॉस्पीटल हो उसमें हिन्दू और सिक्खों का कोई सवाल नहीं सभी धर्म के भाईयों को उसका लाभ मिलेगा। मेरे अपने चुनांव क्षेत्र में एक बहुत बड़ा ऐतिहासिक गुरूद्वारा शीशगंज गुरूद्वारा तरावड़ी में है जिसका इतिहास है कि जब गुरू तेग बहादुर हिन्दुओं और हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए जब वे दिल्ली गये तो उनकी वहाँ पर हत्या कर दी गई। उनके शीश को लेकर गुरूओं के सिक्ख जब दिल्ली से वापिस आये तो एक रात वे तरावड़ी में भी ठहरे थे इसलिए उनके नाम पर वहाँ पर एक ऐतिहासिक गुरूद्वारा शीश गंज है। वहाँ पर बहुत आमदनी है, प्रोपर्टी है और जमीन भी है हमारे यहां पर नए गुरुद्वारों का अपना निर्माण होने जा रहा है। वह प्रबन्ध शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबन्ध कमेटी नहीं कर रही है, उस काम को समाज सेवी सन्त कर रहे हैं। इसके निर्माण में एस०जी०पी०सी० का कोई योगदान नहीं है। स्पीकर सर, मैं ज्यादा कुछ न कहते हुए मुख्य मन्त्री जी से एक निवेदन करना चाहूंगा राजनीतिक पार्टियों ने हमेशा इसका फायदा उठाया है लेकिन वे लोग इस वक्त हाउस से चले गए हैं। हरियाणा में राजनीतिक तौर पर वहां से एक हुक्म नामा जारी होता रहा है कि सारे के सारे सिक्ख औम प्रकाश चौटाला जी की पार्टी को वोट डालें। सन, 2000 के चुनाव से पहले जब जोड़-तोड़ की राजनीति से श्री औम प्रकाश चौटाला जी इस प्रदेश के मुख्य मन्त्री बन चुके थे उस वक्त उन्होंने एक घोषणा की थी कि कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी का नाम गुरू गोबिन्द सिंह यूनिवर्सिटी रखेंगे और जब वे पूरे समुदाय और पूरे धर्म के लोगों की वोट समेट कर सत्ता में आ गए तो उसके बाद अपने उस आश्वासन का कोई जिक्र तक नहीं किया। स्पीकर सर, उन लोगों का हमेशा यह काम रहा है। स्पीकर सर, मैं माननीय मुख्य मन्त्री जी से अनुरोध करूंगा कि बिना किसी देरी के इस कार्य को करें। शुभ कार्य में किसी प्रकार की कोई देरी नहीं होनी चाहिए। सरकार ने जो कमेटी चड्ढा साहब की अध्यक्षता में गठित की थी। जहां तक मुझे जानकारी है इस कमेटी की रिपोर्ट पूरी तरह से तैयार हो गई है। इसलिए उस रिपोर्ट को सदन में ला-कर एक बिल इसी सदन में लाएं जिससे हरियाणा की यह एस०सी०पी०सी० अलग हो क्योंकि यहां के सिक्खों की भावनाओं का भी सवाल है। पीछे जब शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी के चुनाव हुए उन चुनावों में 70 से 75 प्रतिशत सिक्खों ने इस नई कमेटी के गठन के लिए वोट डाले थे। मेरे ख्याल में कोई एक-दो सदस्य तो हरियाणा से जीत गया लेकिन यहां के सिक्खों ने पंजाब की एस०जी०पी०सी० को वोट डाले हैं। स्पीकर सर, इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं और मुख्य मन्त्री जी से अनुरोध करता हूं कि इस पर जल्दी से जल्दी कार्यवाही करने की कृपा करें।

श्री राम कुमार गौतम (नारनौंद) : स्पीकर सर, भाई निर्मल सिंह जी का हरियाणा के लिए अलग शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी के गठन का जो रैजोल्यूशन यहां पर प्रस्तुत किया गया है मैं उसका समर्थन करता हूं। मैं तो यह भी चाहता हूं कि हर स्टेट में शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी अलग से बनें और सिक्ख गुरूओं की जो कुर्बानियां थीं वे साधारण कुर्बानियां नहीं थीं। उनकी कुर्बानियों को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है। जब तक यह इतिहास रहेगा जब तक यह कौम जिन्दा रहेगी तब तक उनका बलिदान और कुर्बानियों को भुलाया नहीं जा सकता। गुरू तेग बहादुर जी का शीश कटवाना हमारे हिन्दु धर्म के लिए गौरव की बात है और गुरू गोबिन्द सिंह जी ने हिन्दु धर्म की रक्षा के लिए अपने बच्चे दीवारों में चुनवा दिये। वे केवल सिक्खों के ही गुरू नहीं हैं बल्कि

वे 90 करोड़ हिन्दुओं के भी गुरू हैं। हर स्टेट में गुरूद्वारों का प्रबन्ध अलग होना चाहिए। यह जो सिक्ख कौम है यह वाकई ही एक बहुत मजबूत कौम है। स्पीकर सर, मैं चार साल तक चण्डीगढ़ में पढ़ा हूं और पंजाब यूनिवर्सिटी के बारे में मेरा तजुर्बा है कि सिक्ख भाईयों के दिल बहुत बड़े हैं। पंजाब के सिक्ख भाईयों के दिल भी बहुत बड़े हैं। पंजाब के जो सिक्ख हैं उनका दिल और पंजाब का जो आम आदमी है उसका भी दिल मैं समझता हूं कि बहुत बड़ा दिल है। स्पीकर सर, जहां तक हिन्दू और सिक्ख धर्म का सवाल है, मैं इनको अलग नहीं समझता सिक्ख और हिन्दू एक ही धर्म के दो भाई हैं एक बड़ा भाई है और एक छोटा भाई है। इन दोनों का खून का रिश्ता है इसको कभी भी अलग नहीं किया जा सकता है। सिक्ख इतनी संघर्षशील और मेहनती कौम है जिसने सारी दुनियां में पहुंच कर अपनी कामयाबी को सिद्ध किया है। एक एक आदमी जा कर एक एक फार्म हाउस बनाता है। देश और दुनियां के विकास में सिक्ख कौम का बहुत बड़ा योगदान है। शहीद-ए-आजम भगत सिंह की कुर्बानी को पूरा हिन्दुस्तान कभी भूल नहीं सकता उन्होंने अपनी जान देश और कौम पर कुर्बान कर दी। पंजाब हमारा बड़ा भाई है और हम छोटे भाई हैं। लेकिन जब मामला पानी का आता हे तो वे सौतेली मां बनकर खड़े हो जाते हैं। मेरी पंजाब के सिक्ख भाईयों से प्रार्थना है कि उनको इस तरह से नहीं करना चाहिए। उनको कम से कम हमारे हिस्से का जो पानी है वह जरूर देना चाहिए। इसके साथ ही अध्यक्ष महोदय, यह जो प्रस्ताव निर्मल सिंह जी लेकर आए हैं मैं उसका समर्थन करता हूं। धन्यवाद।

श्री एस०एस० सुरजेवाला (कैथल) : स्पीकर सर, आपने मुझे इस प्रस्ताव पर बोलने के लिए समय दिया इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं। स्पीकर सर, पंजाब में जो शिरोमणी अकाली दल पार्टी है जिसका एस०जी०पी०सी० पर कब्जा है, वे नए किस्म के महंत हैं। स्पीकर सर, जिन महंतों से गुरूद्वारों को छुड़वाने के लिए 21वीं सदी में हमारे गुरू गोबिन्द सिंह जी ने और सिक्ख भाईयों ने कुर्बानियां दी थीं कि वे महंत गुरूद्वारों में लूट खसोट न कर सकें। वह जो मूवमैंट चली थी वह एक किस्म से आजादी की लड़ाई जैसी ही थी। मैं उस मूवमैंट के साथ एक परिवार को और जोड़ता हूं वह था पंण्डित जवाहरलाल जी का परिवार क्योंकि उन्होंने देश की आजादी में बहुत बड़ा योगदान दिया था। स्पीकर सर, पहले जो महंत थे वे गुरूद्वारों में बहुत ही गलत काम किया करते थे और उनसे उनका कब्जा हटाने के लिए हमारे सिक्ख भाईयों ने बहुत कुर्बानियां दी थीं। स्पीकर सर, आज की जो पंजाब की एस०जी०पी०सी० है वह माडर्न महंत हैं और इन नए महंतों से गुरूद्वारों के कब्जों को छुड़वाना बहुत ही जरूरी है। स्पीकर सर, हरियाणा की जो शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी से जुड़े हुए सदस्य हैं वे आज सदन की दर्शकदीर्घा में बैठे हुए हैं। वे भी उतने ही बहादुर हैं जितने पहले वाले सिक्ख भाई थे। जिन्होंने पहले वाले महन्तों से गुरूद्वारों को छुड़वाने के लिए लड़ाई लड़ी थी। मैं इन सब भाईयों का धन्यवाद करता हूं कि जो इन्होंने यह कदम उठाया है। अध्यक्ष महोदय, एक्चुअली इनकी हरियाणा की जो इनैलो की पार्टी है उनको अपनी पार्टी का नाम बदल कर हरियाणा अकाली दल रख लेना चाहिए। इनकी पार्टी पंजाब के अकाली दल की छोटी ब्रांच है। ये तो कुछ करते नहीं हैं जो कुछ भी करते हैं वह सब कुछ तो वे ही करते हैं। अकाली पंजाब में कहते हैं कि हम हरियाणा को एक बूंद पानी नहीं देंगे तब ये उस विषय में कुछ नहीं कहते हैं। आज भी सदन में इतना बढ़िया प्रस्ताव आया है तो वे सदन से बाहर चले गए हैं। यह बहुत ही शर्म की बात है। स्पीकर सर, मेरे से पहले बोलते हुए वक्ताओं ने बहुत ही अच्छी-अच्छी बातें कहीं है और मेरे कहने के लायक कुछ भी नहीं रहा है। इसके बावजूद मैं यह कहना चाहूंगा कि गुरूद्वारा पूजा और अर्चना का स्थान है। जिसमें सिक्खों की ही नहीं बल्कि

[श्री एस०एस० सुरजेवाला]

हिन्दूओं की भी बहुत आस्था है। सिक्ख धर्म के इतिहास के बारे में मैं यह कहना चाहूंगा कि गुरू गोबिन्द सिंह जी के पिता जी ने देश की लड़ाई के लिए अपना शीश कटवा लिया था और गुरू गोबिन्द सिंह जी के बेटों को जिन्दा ही दीवार में चिनवा दिया गया था। स्पीकर सर, गुरू गोबिन्द सिंह जी के परिवार ने इतनी बड़ी कुर्बानी दी है जो कि कोई नहीं दे सकता था। इनके अलावा दूसरा परिवार मेरी नजर में गांधी परिवार है। जिन्होंने अपनी दो-दो, तीन-तीन पीढ़ियां देश भक्ति के लिए कुर्बान की हैं। अध्यक्ष महोदय, गुरू गोबिन्द सिंह जी एक ऐसे इंसान हुए हैं, एक ऐसे महान देशभक्त हुए हैं, ऐसे गुरू हुए हैं जिनकी मिसाल बहुत कम मिल सकती है। वे बहुत दूरदर्शी थे, वे सन्त भी थे,वे बहादुर भी थे, वे अच्छे जनरल भी थे और वे अच्छे पोयट या लिखाड़ी भी थे। उन्होंने जिस बुद्धिमत्ता से खालसा पंथ की नींव रखी, खालसा पंथ को बनाया वह मैं समझता हूं कि दुनिया के जो बहुत बड़े बहादुर जनरल हुए हैं वे भी उनसे मुकाबला करने में पीछे हैं। अध्यक्ष महोदय, बहुत सी बातें हमारे साथियों ने कहीं हैं। मैं तो अंत में एक ही बात कहना चाहता हूं कि पंजाब की अकाली पार्टी जिसका गुरूद्वारों पर कब्जा है उन्होंने सिक्ख धर्म का जो अहित किया है, जो नुक्सान किया है उसकी मिसाल कहीं नहीं मिलती। इस सिक्ख धर्म के लिए ही पहले हिन्दू विशेष तौर से और दूसरे धर्मों के लोग भी अपने बड़े बेटे को केशधारी बनाते थे लेकिन आज क्या हालत है ? आज हालत यह है कि आतंकवाद का समर्थन करके, गुरूद्वारों का नंगा दुरूपयोग करके, गुरूद्वारों को देशभक्ति के खिलाफ मोर्चाबंदी करवाकर उन्होंने सिक्खों को कहां पहुंचा दिया। एक वक्त तो ऐसा भी आया था जब सिक्खों को देश और दुनिया में इन्होंने बदनाम किया था। अध्यक्ष महोदय, प्रकाश सिंह बादल और इनके दूसरे लीडर इतने कायर भी हैं कि आंतकवादियों का ये समर्थन भी करते थे और उनसे डरते भी थे। कई सालों तक, कई महीनें तक यह अंडरग्राउंड हो गये थे। अध्यक्ष महोदय, मैं यह भी कहना चाहूंगा कि पंजाब में आंतकवाद का खात्मा भी हमारे बहादुर देश भक्त सिक्ख भाइयों ने ही किया है यह काम दूसरा कोई नहीं कर सकता था। खेतों में जिनको हम डेरे कहते हैं या जो फार्म हाउस थे तो एक वक्त था कि एक-एक करके आंतकवादियों ने सबको भयभीत किया, डराया लेकिन जल्दी ही वह वक्त भी आया जब पानी सिर से ऊपर चला गया तो हमारे सिक्ख भाइयों ने ही आतंकवाद का खात्मा किया। उनसे नफरत करी, उनका हर तरह से सोशल बायकाट किया और उनको गिरफ्तार करवाया। आंतकवाद खत्म करने का क्रेडिट उस वक्त के जो पंजाब पुलिस के डी०जी०पी० जो स्वंय एक सिक्ख थे और जिन्होंने उस समय सारी मूवमैन्ट को लीड करके इस देश को आतंकवाद से आजाद करवाया था, उनको भी जाता है। इसी प्रकार से सरदार बेअन्त सिंह का नाम भी उन बहादुर लोगों की लिस्ट में है जो बहादुरी के साथ पंजाब को दोबारा से नेशनल मेन स्ट्रीम में लाए थे। अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि हरियाणा का जो सिक्ख है उसके हित हर तरह से हरियाणा के साथ ही जुड़े हैं। मेरे से पहले बोलते हुए मुलाना साहब तथा दूसरे साथियों ने कहा कि हरियाणा का पानी पंजाब वाले बंद करने की बात करते हैं तो हरियाणा के सिक्ख के लिए इससे ज्यादा नुक्सान की बात कोई और नहीं है। उन्होंने हमारे गुरूद्वारों पर कब्जा कर रखा है। इनका लाभ जो हमारे प्रान्त के लोगों को, सिक्खों को पहुंचना चाहिए उन्होंने उससे बिल्कुल वंचित किया हुआ है। अध्यक्ष महोदय, मैं इस रैजोल्यूशन का समर्थन करता हूं और मुझे उम्मीद है कि बहुत जल्दी यह एक्ट की शक्ल में, लॉ की शक्ल में कानून बनेगा और इसके बाद हमारे गुरूद्वारे आजाद होंगे और हमारे सिक्ख भाइयों को इनका लाभ मिलेगा। धन्यवाद।

श्री शादी लाल बत्तरा (रोहतक) : अध्यक्ष महोदय, जब देश आजाद हुआ तो उस वक्त आज का हरियाणा और पंजाब एक ही प्रदेश के अंग थे। 1966 तक ज्वॉइंट पंजाब हरियाणा पर भी और पंजाब पर भी राज्य करता रहा । अब एक सोच आई कि हमारे अधिकारों का हनन हो रहा है और जो विकास होना चाहिए था, वह नहीं हो रहा है। री-ऑर्गेनाइजिंग स्टेट में हरियाणा बना और एक एक्ट के तहत बना। उससे राजनीतिक तौर पर तो हमें आजादी मिल गई और उस समय कहा गया कि धार्मिक संस्थाओं को भी उनका अधिकार दिया जाएगा। 41 साल तक पंजाब राज्य हमारी धार्मिक संस्थाओं पर राज करता रहा, उनको गवर्न करता रहा। उन गुरूद्वारों को हम किस तरह से गवर्न करें और वे कैसे बनें इसका अधिकार हमें नहीं मिला। आज समय आ गया है कि हम यह मांग उठाएं कि जो एस०जी०पी०सी० कर रही है वह गलत है। आज हरियाणा में जितने भी गुरुद्वारे हैं हर गुरुद्वारे की गोलक की 25 परसैंट रिसीट जो होगी उसे वे ले जाते हैं। गुरुद्वारे का मैनेजमैंट बाकी की 75 प्रतिशत की राशि से होता है। अगर 75 प्रतिशत राशि में करें तो अंडर सैक्शन 85 में नोटिफाई है कि इनका सारा पैसा एस०जी०पी०सी० को जाएगा। कुछ गुरुद्वारे ऐसे हैं जिनमें 1987 में यह हुआ था 20 लाख तक की आमदनी वाले गुरुद्वारे हरियाणा में रह सकते हैं और लोकल बॉडीज में आ सकते हैं। जैसे ही आमदनी 20 लाख से ज्यादा होगी तो वे एस०जी०पी०सी० के कंट्रोल में आ जाएंगे। एस०जी०पी०सी० अपॉइंट किसको करती है, हरियाणा में से किसी को नहीं करती है। तनख्वाह भी बहुत अच्छी देती है। आम ग्रन्थी की तनख्वाह 12 हजार रुपये महीना होती है और हरियाणा का पैसा हरियाणा का चढ़ावा पंजाब में ले जाया जाता है और वहां इसे यूज करते हैं। चाहे वह विकास के रूप में यूज करें चाहे थैली के रूप में देते हैं। फिर हमारा पैसा वहां क्यों जाए ? क्या हम अपने अधिकारों की रक्षा करने में समर्थ नहीं हैं ? गुरु आए थे और उन्होंने हमें मानवता का पाठ पढ़ाया था और यह पढ़ाया था कि हम अपने दुश्मनों से अपने अधिकार कैसे वापस लाएं। उस वक्त मुसलमानों का राज होता था। सिक्खों ने कुर्बानियां दी और उनकी उन कुर्बानियों के बाद वे गुरु ग्रन्थ साहब दे गए थे। गुरु ग्रंथ साहब की एक ही शिक्षा है कि अपने अधिकारों के लिए खड़े होओ और अगर खड़े नहीं होते हैं और उनको वापस लेने का प्रयास नहीं करते हैं तो इसका मतलब यह है कि आप कमजोर हैं, आप कायर हैं। आपको जीने का कोई अधिकार नहीं है। अगर उनकी शिक्षा पर हम चलते हैं तो पाते हैं कि हमारे अधिकारों का पूरी तरह से हनन हो रहा है। हर तरह से हनन हो रहा है। पैसा लिया जा रहा है। चट्ठा साहब ने कहा कि उनके पास 3516 एकड़ लैंड है। मेरे आंकड़ों के हिसाब से 5 हजार एकड़ से भी ज्यादा भूमि गुरुद्वारों के पास है और उनका पूरा प्रयोग नहीं हो रहा है, सदुपयोग नहीं हो रहा है। बल्कि कुछ लोगों ने इन्क्रौच करके अपनी कर रखी है। अगर हरियाणा की एस०जी०पी०सी० अलग से हो तो वह जो जमीन है जिस पर नाजायज कब्जे हो रहे हैं उन कब्जों को छुड़वाकर उसकी आमदनी भी गुरूद्वारों में लाई जा सकती है। यहां की 100 करोड़ रुपये की आमदनी यहां से ले जाते हैं यहां 18 करोड़ रुपए देते हैं बाकी के कहां क्या करते हैं इसका कुछ पता नहीं है। एक ही भावना है कि उन्होंने यह सोच लिया है कि हम राजा हैं, हम जो कुछ करना चाहे कर सकते हैं। King can do no wrong. किसी ने कह दिया कि गुरूद्वारों पर हमारा राज चलेगा। आज एक जो समस्या उठी है कि आज जो हमारे सिक्ख हैं या जो सहजधारी सिक्ख हैं जो गुरु ग्रंथ साहब को मानते हैं। उन सबकी एक ही आवाज है कि गुरु ग्रंथ साहब को मानने के लिए गुरु ग्रंथ साहब का जहां प्रकाश हो रहा है। उसको गवर्न करने के लिए भी हमें अधिकार होने चाहिएं। लोकल बॉडी बननी चाहिए और वह बॉडी अमृतसर से कंट्रोल न होकर अपने हरियाणा में से कंट्रोल होनी चाहिए। उसके लिए

[श्री शादी लाल बत्तरा]

गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अलग से बने यह प्रस्ताव आज हाउस में पेश हुआ है। इस प्रस्ताव पर मेरे भाइयों ने बड़े ही विस्तार से अपने विचार रखे हैं और एक ही विचार है कि अगर हमारी शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सैपरेट होती है तो हमारे गुरुद्वारों का प्रबंध करने का इंतजाम हमें दिया जाता है उनमें जो आमदनी होगी उसको हम अपने तरीके से खर्च कर पाएंगे, ठीक जगह पर पैसा लगा पाएंगे और हम सब का गर्व और गौरव भी वापस आएगा। फिर यह होगा कि हम सिर्फ राजनीतिक तौर पर आजाद नहीं हैं बल्कि हम धार्मिक तौर से भी आजाद हैं। अपने धर्म की पूजा कर सकते हैं। अपने धर्म की अर्चना कर सकते हैं। उनको गवर्न भी कर सकते हैं और लोकल बॉडी भी बना सकते हैं। मैं इस प्रस्ताव का पुरजोर समर्थन करता हूं । धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष : थैंक्यू वैरी मच, बत्रा साहब।

श्री कर्ण सिंह दलाल (पलवल) : अध्यक्ष महोदय, चौधरी निर्मल सिंह जी हरियाणा के लिए अलग से एस०जी०पी०सी० बनाने का जो संकल्प आज लेकर आए हैं मैं उसका समर्थन करता हूं। अध्यक्ष महोदय, सिक्ख धर्म इस समस्त दुनिया का सबसे जवान धर्म है और गुरूओं की कुर्बानियां और सिक्ख समुदाय की समस्त वीर-वीरांगनाएं और जो कुर्बानियां हैं इसके लिए उनको कभी भुलाया नहीं जा सकता। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से इस प्रस्ताव का समर्थन कर रहा हूं। अभी माननीय सभी साथियों ने अपनी राय यहां पर व्यक्त की है। अध्यक्ष महोदय, यह ठीक है कि यह प्रस्ताव सिक्ख समुदाय से जुड़ा हुआ है और एस०जी०पी०सी० है वह चाहे पंजाब की हो लेकिन इस धर्म से जुड़े हुए जो हमारे गुरूद्वारे हैं जो संस्थाएं हैं इनका संचालन करने का अधिकार उनके पास है। मैं यह बात सदन में कहना चाहता हूं कि माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा की अध्यक्षता में यह कमेटी बनाई और यह कार्यक्रम बनाया और जिसके बारे में चौधरी निर्मल सिंह जी यह प्रस्ताव लेकर आये जो हरियाणा के गुरूद्वारों की संस्थाओं की देखभाल ठीक तरीके से करेगी। इस धर्म के मानने वाले और इस धर्म में आस्था रखने वाले लोगों की भावना के मुताबिक सारे कार्य हों और यह संकल्प भी इस प्रस्ताव में हैं। अध्यक्ष महोदय, इससे भी बड़ा संकल्प यह है कि जो एक इतना महान धर्म जिसने दुनिया के सामने इतनी बड़ी मर्यादाएं स्थापित करके दिखाई, एक ऐसा धर्म जिसका इस देश के लोगों पर इतना बड़ा अहसान है कि देश कभी भी नहीं भूल सकता। अगर यह धर्म नहीं होता तो अध्यक्ष महोदय, आप अच्छी तरह से जानते हैं कि उन दिनों जिस तरह से मुगल शासक हमारे देश पर हमला किया करते थे, किस तरीके से इस धर्म के लोगों ने उनका मुकाबला किया । इस देश की मर्यादाओं की रक्षा की। लेकिन अध्यक्ष महोदय, जो सोचने वाली बात है वह यह है कि पंजाब में जो एस०जी०पी०सी० है उनके लिए भी और जो हरियाणा में यह सुमदाय है उनसे भी मैं एक प्रार्थना करना चाहता हूं कि जो जवान पीढ़ी है जो सिक्ख परिवारों के हमारे जवान बच्चे हैं वह भी इस धर्म की मर्यादाओं को कहने को तो दिखाई देते हैं कि सिक्ख धर्म के समुदाय के संबंध रखते हैं इन जवान बच्चों के अगर हम स्वरूप को देखें तो उनकी नई भावना को देखें तो अध्यक्ष महोदय, हमें चिन्ता होती है। अगर हमारी जवान पीढ़ी हमारे गुरूओं की कुर्बानियों को याद नहीं रखेगी और जवान बच्चे सिक्ख धर्म की मर्यादाओं को याद नहीं रखेगें और इस तरह से इस धर्म से हटकर नई दुनिया के साथ चलेंगे तो हमारी जवान पीढ़ी मर्यादा से हटती चली जायेगी। अध्यक्ष महोदय, देश के अन्दर इस बात की चर्चा होती है कि दुनिया में एक ही धर्म है और धर्म नहीं है कि जो भी आन्दोलन हो या क्रान्ति हो जो भी इस धर्म में

आस्था मान करके और जो गुरूओं की भावनाओं को मानकर के आगे चलेगा उनके जीवन में उनके कार्यों में हर तरह की व्यवस्थाओं में बहुत बड़ा सुधार आयेगा। इसलिए हरियाणा की एस०जी०पी०सी० को अलग से स्थापित कर रहे हैं ताकि नये सिरे से इस धर्म की मर्यादाओं को स्थापित करने का काम करेगी। अध्यक्ष महोदय, पिछले दिनों मैं विदेश गया था इंग्लैण्ड में जाकर देखा तो मैं बड़ा खुश हुआ कि सिक्ख जो वहा पर बसे हुए हैं वे सिक्ख धर्म की मर्यादाओं को आसमान की ऊंचाईयों तक ले जाने का काम कर रहे हैं। मैंने अपनी आंखों से देखा कि विदेशों में जब पंजाबी भाषा में गीत गाये जाते हैं तो विदेशी लोग उन धुनों पर नाचना शुरू कर देते हैं। उस भाषा को जो हम यहां नहीं बोल पाते यहां की नौजवान पीढ़ी बोल नहीं पाती विदेश में रहने वाले इस भाषा को बोलने का प्रयास करने लगे हैं। अध्यक्ष महोदय, अगर आज हम अपने देश में प्रदेशों के नाम पर बंटकर के इतने बड़े धर्म की मर्यादा का और इतनी बड़ी कुर्बानियों को भूलने की तरफ अगर हम चल पड़ेंगे तो आने वाली पीढ़ियां हमें माफ नहीं करेंगी। अध्यक्ष महोदय, मैं जिस इलाके से आता हूं वहां मुश्किल से 25-30 सिक्ख परिवार रहते हैं। एक दिन उनके छोटे-छोटे बच्चे खेल रहे थे जब मैंने उन से पूछा बेटे क्या आपको पंजाबी भाषा बोलनी आती है तो उन बच्चों ने कहा नहीं हमें पंजाबी भाषा बोलनी नहीं आती। तो यह जो एस०जी०पी०सी० की हरियाणा प्रदेश में अलग से स्थापना होगी इसके लिए मैं तो पंजाब के सभी नेताओं से इस बात के लिए आग्रह करूंगा कि इसका उन्हें विरोध नहीं करना चाहिए, समर्थन करना चाहिए। अगर एस०जी०पी०सी० हरियाणा में बनेगी तो हरियाणा में वह न केवल धर्म के मामले में बल्कि पंजाबी भाषा को भी प्रदेश के स्कूलों और कालेजों में स्थापित कर पायेगी। पंजाबी भाषा जिससे हरियाणा प्रदेश हरियाणा-पंजाब के बंटवारे के समय महरूम हो गया था उस भाषा को यह कमेटी हरियाणा में स्थापित करने में कामयाब होगी। अध्यक्ष महोदय, आप और मैं सिक्ख समुदाय से संबंध नहीं रखते लेकिन मैं फख्र के साथ कहता हूं कि मैं सभी गुरूओं और उनके नियमों को मानता हूं। जो सिक्ख समुदाय के अंदर गुरूद्वारे हैं उनमें माथा टेकता हूं गुरूद्वारे बहुत पवित्र स्थान हैं मेरे बेटे भी सबसे पहले गुरूद्वारे में सिर झुकाने के लिए जाते हैं और न जाने कितने ऐसे हजारों परिवार हैं जो सिक्ख न होते हुए भी सिक्ख धर्म की मर्यादाओं को मानने के लिए तैयार रहते हैं तथा सिक्ख धर्म को अपनाना चाहते हैं। अध्यक्ष महोदय, मैं इस संकल्प के साथ यही निवेदन करता हूं कि हरियाणा प्रदेश की अलग से एस०जी०पी०सी० कमेटी बने और जो हमारी सिक्ख धर्म की मर्यादाएं हैं, गुरूओं की कुर्बानियां हैं जो उनकी वाणी हैं उनका भी हमें अनुसरण करना चाहिए। अध्यक्ष महोदय, अंत में मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि मैंने अभी हूज-हू (who's who) की किताब पढ़ी है। इसमें ओम प्रकाश चौटाला ने अपने विवरण में दिया है कि--

प्रादेशिक विवादों में हरियाणा के पक्ष की हिमायत करना। अध्यक्ष महोदय, आज सदन में क्या हो रहा है ? प्रादेशिक विवाद में आज हरियाणा के एक पक्ष की हिमायत की बहस होने लग रही है। चौधरी निर्मल सिंह जी एक अच्छा संकल्प सदन के सामने लेकर आये हैं, सरकार ने एक बहुत अच्छी कमेटी बनाई है और मुख्य मंत्री जी भी प्रयास कर रहे हैं लेकिन प्रदेश के हितों की हिमायत करने वाले जो किताबों में झूठा बखान करते हैं वे सदन से नदारद हैं। अध्यक्ष महोदय, यह भी देखने वाली बात है कि एक तरफ तो ये हिमायती होने की बात लिखते हैं और दूसरी तरफ इसी हूज हू (who's who) में इन्होंने यह भी विवरण दिया हुआ है कि--

चौधरी देवी लाल जी की नीतियों पर विश्वास करना।

[श्री कर्ण सिंह दलाल]

अध्यक्ष महोदय, जब हरियाणा पंजाब का बंटवारा हो रहा था उस समय हिंदी और पंजाबी भाषा का जो झगड़ा हुआ था वह किसने करवाया था। वह झगड़ा चौटाला जी के पिता श्री चौधरी देवी लाल जी ने करवाया था। उन दिनों तो ये लोग कहते थे कि ये बातें अलग हैं, इसमें हमारा हित नहीं है और आज जब हरियाणा बन चुका है और हरियाणा के हितों की बात हो रही है, हरियाणा में रहने वाली एक समुदाय विशेष के हितों की बात हो रही है तो ये श्रीमान जी यहां से गायब हैं। अध्यक्ष महोदय, इन शब्दों के साथ मैं इस संकल्प का समर्थन करता हूं।

श्री बच्चन सिंह आर्य (सफीदों): अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे भाई निर्मल सिंह जी द्वारा लाये गये प्रस्ताव पर बोलने के लिए समय दिया इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं। मैं सिक्ख धर्म के इतिहास के उन पन्नों में नहीं जाऊंगा कि गुरू नानक देव से ले करके और दसवें पातशाह गुरू गोबिन्द सिंह जी का इतिहास क्या रहा है, इस बारे में सभी जानते हैं कि गुरूओं और सिक्खों का इतिहास क्या रहा है। यह धर्म बहादुरी और अध्यात्मक से भरा हुआ है और इनके नियम पूरे संसार में रहने वाले सभी सिक्ख भाइयों पर लागू होते हैं। चाहे वह पंजाब एस०जी०पी०सी० के हैं, चाहे हरियाणा एस०जी०पी०सी० के हैं। अध्यक्ष महोदय, प्रस्ताव यह नहीं है कि हम सिक्ख धर्म के इतिहास में जायें। यह प्रस्ताव इस बात को ले करके आया है कि जो हरियाणा के अंदर सिक्ख भाई रह रहे हैं उन लाखों लोगों की भावनाओं की बात है कि जो हमारे गुरूद्वारों में माथा टेकते हैं, जो सिक्ख भाइयों की भावनाओं से जुड़ा हुआ मामला है वह पैसा पंजाब में जाये और उस पैसे का राजनीतिकरण होकर दुरूपयोग हो यह ठीक बात नहीं है। यही बात है कि हमारे सिक्ख भाई हरियाणा की अलग से शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबन्ध कमेटी बनाना चाहते हैं । आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आज से कुछ समय पहले जब हरियाणा पंजाब एक राज्य था उस समय भी ऐसे ही जैसे सिक्ख धर्म की बात है आर्य समाज की भी बात उठी थी। उस समय आर्य समाज की पूरे पंजाब की एक आर्य प्रतिनिधि सभा हुआ करती थी जिसका कार्यालय विद्युत भवन, जालन्धर में हुआ करता था और आर्य समाज के गुरूकुल और संस्थाओं का सारा पैसा वहीं जाया करता था। उसमें से हरियाणा में कुछ पैसा आता या नहीं भी आता था और किसी प्रकार का विकास यहां नहीं होता था। इन बातों को ध्यान में रखकर जब हमारे सन्यासियों, साधुओं और आर्य समाज के लोगों ने यह आवाज उठाई कि हरियाणा की अलग से आर्य प्रतिनिधि सभा होनी चाहिए तो उस समय ईमानदारी से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश तीनों स्टेट्स की अलग-अलग आर्य प्रतिनिधि सभा बना दी। हरियाणा की आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यालय आज के दिन दयानन्द मठ रोहतक में है । आज जो एस०जी०पी०सी० पंजाब की है वह क्या कारण हैं कि हरियाणा की अलग से एस०जी०पी०सी० कमेटी नहीं बनना देना चाहती । जबकि हरियाणा के सिक्ख भाई अपने खून-पसीने की कमाई को गुरूद्वारों में चढ़ाते हैं और इससे करोड़ों रुपये की इन्कम होती है। वह इन्कम पंजाब में जा रही है और उनके मन में कहीं न कहीं लालच है और उस लालच में अकाली दल के सुप्रीमो श्री प्रकाश सिंह बादल हैं वे ओमप्रकाश चौटाला जी के धर्म भाई हैं वे इसका राजनीतिक लाभ उठाते हैं। उसका इस्तेमाल अपने राजनैतिक लाभ के लिए करते हैं। अध्यक्ष महोदय, यह बात सही है कि हरियाणा के भाईयों को भी इसी प्रकार का लालच देकर पिछले 5-7 साल से राजनीतिक लाभ ये उठा रहे हैं मेरे हलके में भी 3 प्रसिद्ध गुरूद्वारे हैं। एक सच्चा सौदा गुरूद्वारा मलिकपुर में है। वहां महीने की लाखों रुपये की आमदनी है मगर एस०जी०पी०सी० पंजाब से फरमान जारी कर दिया जाता है और वह सारी कमाई पंजाब में चली

जाती है। सफीदों से एक किलोमीटर दूर है और उसकी हालत बहुत खराब है। दूसरा गुरूद्वारा सिंघपुरा गांव में है जहां गुरू अर्जुनदेव जी आये थे और लम्बे समय तक वहां पर रहे थे। कुछ समय पहले एस०जी०पी०सी० पंजाब ने वहां पर कब्जा कर लिया। वे लोग कोर्ट में गये लेकिन अब भी वहां पर उन्हीं का कब्जा है। दैनिक आमदनी कई हजार की है। जो लोग मत्था टेकते हैं। वहां पर हजारों लोगों की भावना जुड़ी हुई है। अध्यक्ष महोदय, एस०जी०पी०सी० को सिर्फ पैसे का लालच है इसलिए मेरा पुरजोर निवेदन यह है कि जिस तरह से और धार्मिक संस्थाएं हरियाणा और पंजाब की अलग-अलग प्रतिनिधि सभाएं बनाकर उनका कार्यभार वहां के प्रान्तों के लोगों ने सम्भाल रखा है। मैं इस प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूं कि उसी तरह से हरियाणा की एस०जी०पी०सी० भी अलग होनी चाहिए। धन्यवाद।

श्री अमीर चन्द मक्कड़ (हांसी) : अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। भाई निर्मल सिंह जी ने जो प्रस्ताव रखा है उसके हक में बोलने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं। मेरे से पहले भी इस प्रस्ताव पर बहुत सारे साथी बोले हैं। मैं यह समझता हूं कि हरियाणा के सिर्फ सिक्ख भाइयों का ही नुकसान नहीं है बाकी लोगों का भी नुकसान कर रहे हैं। हरियाणा में अलग शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी बनाने के लिए प्रस्ताव रखा है उसके बनने के बाद यहां पर भी विकास कार्य होंगे और जो पैसा पंजाब में ले जाते थे वह पैसा हरियाणा के हर व्यक्ति के काम आयेगा। जो भी राज्य में कॉलेज बनता है, मैडिकल कॉलेज बनता है या कोई हस्पताल बनता है मुझे पता है कि उसमें 36 कौम के बच्चे पढ़ाई पढ़ते हैं। इसलिए अलग एस०जी०पी०सी० न बनने के कारण सारे हरियाणा का नुकसान हो रहा है। गुरू साहेबानों ने अपनी कुर्बानी देकर हिन्दू कौम को बचाया है आज वही हिन्दू कौम अगर सिर उठाकर चलती है तो यह सब गुरूओं की कुर्बानी का सबक है। किसी कवि ने यह कहा है कि चारों चार लाल, वार दैंगे, देश लई और कौम लई। गुरू गोबिन्द सिंह जी के दोनों बच्चों को जब दीवार में चुना जा रहा था तो छोटे बच्चे की दीवार पर ईंट पहले आ गई तो बड़े बच्चे की आंखों में आसूं आ गये। जल्लाद ने कहा अगर आप रो रहे हैं तो दीवार हटा देता हूं लेकिन इस्लाम कबूल कर लीजिए। लड़के ने कहा नहीं जल्लाद मैं तो इसलिए रो रहा हूं कि मेरे से पहले छोटा शहादत पा रहा है, मैं इसलिए रो रहा हूं और मुझे इस बात का दुख है । उन गुरूओं की कौम के प्रति कितनी बड़ी कुर्बानी थी कितना जज्बा था। आज उन गुरू साहेबानों की कुर्बानी का प्रकाश सिंह बादल सिर्फ अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करने की बात करते हैं। वे वहां से यहां के सिक्खों के लिए हुक्मनामें भेजता है। कुछ सिक्ख भाई उनकी बात को मानते हैं लेकिन ज्यादा नहीं मानते। प्रकाश सिंह बादल ने पंजाब विधान सभा में यह प्रस्ताव रखा है कि जो पानी हरियाणा में जा रहा है उसको हम बन्द कर देंगे उन्होंने यह नहीं सोचा कि हरियाणा में जो सिक्ख भाई हैं वे भी तो जमींदार हैं वे तो सिर्फ अपना पेट पालने की बात करते हैं न कि जनता की भलाई की बात करते हैं। चौटाला साहब की इनैलो पार्टी है वह पब्लिक को कितना गुमराह करती है और झूठ बोलकर वोट ले जाती है। वे इसी आधार पर चल रहे हैं। इनैलो के नेता बयान तो देते हैं कि हरियाणा के हित उन्हें सर्वप्रिय हैं और काम करते हैं प्रकाश सिंह बादल के लिए जो हरियाणा के हक के जल को खत्म करना चाहता है। हरियाणा के किसानों के हित मारना चाहता है। उनकी पार्टी के लिए पंजाब में जाकर प्रचार करते हैं, और उनकी पार्टी की जीत पर खुशियां मनाते हैं, डान्स करते हैं, पार्टियां करते हैं। इन बातों से क्या वे हरियाणा के हितैषी साबित हो सकते हैं ? उन्हें पता लग गया था कि हरियाणा की अलग से एस०जी०पी०सी० बनाने के लिए प्रस्ताव आएगा इसलिए वे लोग बाहर भाग

[श्री अमीर चन्द मक्कड़]

गये ताकि प्रस्ताव पर कुछ बोलना न पड़े और न ही प्रस्ताव की खिलाफत करनी पड़े। इसलिए वे लोग आज हाउस से भाग गए। स्पीकर सर, इस प्रकार से हाउस से बाहर चले जाना गलत बात है। इसलिए हम उनकी इस कार्यवाही की निन्दा करते हैं। स्पीकर सर, यह प्रस्ताव बहुत ही अच्छा प्रस्ताव है, मैं इस प्रस्ताव का पुरजोर समर्थन करता हूं और पूरे हाउस से यह निवेदन करता हूं कि इस रैजोल्यूशन को जल्दी से जल्दी पास कर दिया जाए ताकि हरियाणा में एस०जी०पी०सी० अलग से बन सके और सिक्खों को सही रूप से फायदा मिल सके। स्पीकर सर, आपने मुझे बोलने के लिए समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। जयहिन्द।

मुख्य मन्त्री (श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा) : अध्यक्ष महोदय, श्री निर्मल सिंह जी हरियाणा में अलग से एस०जी०पी०सी० बनाने के लिए जो प्रस्ताव लेकर आए हैं यह प्रस्ताव बहुत ही अहम प्रस्ताव है। जहां तक सिक्ख धर्म का सवाल है, सिक्ख धर्म सिक्ख गुरूओं की कुर्बानियों और उनके त्याग का परिचायक है। मैं समझता हूं कि सभी माननीय साथियों ने इस पर चर्चा की और सभी साथी सिक्खों के त्याग और बलिदान से वाकिफ हैं जिसका कोई भी सानी नहीं है। उनके त्याग के बारे में सभी को मालूम है जो कि इतिहास में सुनहरे शब्दों में लिखा जाना चाहिए। स्पीकर सर, जहां तक धर्म का सवाल है, हरियाणा में सिक्ख भाइयों, मुस्लमान भाइयों और मेरे क्रिश्चिन भाइयों का माईनोरिटी में विशेष स्थान है। इन धर्मों से सम्बन्धित सभी लोग हरियाणा प्रदेश में अल्पसंख्यक हैं और हम सब का यह फर्ज बनता है कि जो भी माईनोरिटी में हैं वे सब हमारे भाई हैं। हमारे देश में हम सब मिल-जुल कर प्रेम से रहें और उन सब को अपना-अपना हक मिले। चुनाव से पहले जब चुनाव की चर्चा चल रही थी और कांग्रेस पार्टी का मैनिफैस्टो तैयार हो रहा था उस समय बहुत सारी बातें सिक्ख भाइयों के लिए की गई थीं। कुछ सिक्ख भाई मुझे मिले भी थे और मेरे कुछ अन्य साथियों को भी मिले थे और इसके साथ ही कांग्रेस पार्टी के पदाधिकारियों को भी मिले थे। जो इलैक्शन मैनिफैस्टो के लिए तैयारी कर रहे थे! उस समय इन सब की बात सुन कर कांग्रेस पार्टी ने अपना जो मैनिफैस्टो रखा उसमें यह था कि --

"The Congress Party pave the way to aware the strongly demand of Sikh Population of Haryana regarding creating of separate Haryana Sikh Gurudwara Pradhandhak Committee on pattern of Delhi Sikh Gurudwara Prabandhak Committee of Delhi to manage their religious conditions, the party promises to take appropriate steps in that matter." यह बात मैनिफैस्टो में रखकर कांग्रेस पार्टी चुनाव लड़ी और भारी बहुमत से चुनाव में हमारी विजय हुई। अब दो तरीके से लोगों ने यहां पर चर्चा की है। एक तो धार्मिक है और एक राजनीतिक है। स्पीकर सर, जहां तक हमारी कांग्रेस पार्टी का सवाल है, हम किसी के धर्म में दखलअन्दाजी नहीं करते। धर्म का अपना काम है। अपना मैनेजमैंट है और यह उस धर्म के लोगों की भावनाओं के अनुसार होता है। हमें किसी धर्म में दखलअन्दाजी नहीं करनी चाहिए। इसलिए हमने अपने मैनिफैस्टों में इस बात को नहीं रखा था। स्पीकर सर, हरियाणा प्रदेश के जो सिक्ख भाई हैं उनको उनकी भावनाओं को व्यक्त करने का हक है। जैसा मैंने कहा माईनोरिटी की बात थी और उनकी भावना के अनुरूप थी। जैसे चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी ने चर्चा की, मेवात का हमारा मुस्लमान भाई है। विभाजन के समय बहुत सारे मुस्लमान भाई पाकिस्तान चले गए थे लेकिन मेवात में हमारे मुस्लमान भाई वहीं रहे और भारत को अपनी धरती माता मान कर यहां पर रह रहे हैं, इसी बात का मैं उल्लेख करना चाहता हूं । सन 1947 में जब

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान अलग-अलग हुए तो मेरे मुस्लमान भाई मेवात से भी भावुकता में या उकसाए हुए पाकिस्तान जाने को तैयार थे। स्पीकर सर, मेवात में एक गांव घासेड़ा है जहां महात्मा गांधी स्वयं गये थे और उनके साथ मेरे पिता जी भी गए थे। मुझे इस बात पर गर्व होता है कि चौधरी यासीन खान महात्मा गांधी जी के साथ गए थे और वहां पर उन्होंने मुस्लमानों से यह कहा था कि आप यहां पर रहें आपको पूरे अधिकार मिलेंगे। स्पीकर सर, इसी बात को मद्देनजर रखते हुए हमने घासेड़ा गांव को आदर्श गांव बनाने का फैसला किया है ताकि ऐसे जो लोग यहां पर रहे हैं उनकी भावनाओं की कद्र हो सके। इसी तरह से सिक्ख भाइयों की भावनाओं की भी पूरी कद्र हम करते हैं। स्पीकर सर, आज चाहे बीरेन्द्र सिंह जी बोले, चाहे मैं बोला, चाहे रणदीप सिंह सुरजेवाला जी बोले उन्होंने सिक्खों की भावनाओं को प्रेरित किया है। हम इस बात को इस वास्ते नहीं कह रहे हैं बल्कि व्यक्तिगत तौर पर मैं इस बात से सहमत हूं हालांकि इसमें मेरा कोई धार्मिक दखल नहीं है। जो मेरे सिक्ख भाईयों की भावनाएं हैं हम उनकी कदर करते हैं आज चाहे इस प्रस्ताव पर मैं बोला हूं, चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी, रणदीप सिंह सुरजेवाला जी बोलें हैं। हम इस बात को सिर्फ राजनीति करने के लिए नहीं कह रहें हैं और न ही हम उनके धार्मिक काम में कोई दखल दे रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, हमारे सिक्ख भाईयों की जो भावनाएं हैं वह हरियाणा में प्रिवेल होनी चाहिए। हम यह सिर्फ इस वास्ते नहीं कह रहे हैं कि हमारा उनके साथ खून का रिश्ता है, हमारी रोटी-बेटी का उनके साथ रिश्ता है। बीरेन्द्र सिंह जी का बेटा सिक्ख परिवार में विवाहित है, मेरा सगा भतीजा सिक्ख परिवार में विवाहित है, मेरे सगे साले की लड़की एक सिक्ख लड़के के साथ विवाहित है, रणदीप सिंह सुरजेवाला जी के हल्के में सिक्खों का गांव पीपलथाह है। मैं सदन में यह कहना चाहता हूं कि इस वास्ते उनका समर्थन नहीं कर रहे हैं। यह जो प्रस्ताव हम लेकर आए हैं यह एक माईनोरिटी कम्यूनीटि की भावना है और हम उसका समर्थन करते हैं। हमारी सरकार की उनके प्रति जिम्मेवारी बनती है। इस बारे में बहुत सी बातें रामकुमार गौतम जी ने कहीं और सभी सदस्यों ने भी इस प्रस्ताव के पक्ष में अपनी अपनी बातें कहीं हैं। अध्यक्ष महोदय, लेकिन मुझे बड़े ही अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि जो लोगों की भावनाओं के साथ खेलते रहे हैं। जिन्होंने धर्म और राजनीति को अलग नहीं समझा, जो राजनीतिक कार्यों के लिए धर्म का शोषण करते रहे वे आज इस सदन में विपक्ष में बैठे हुए हैं। आज वे सोची समझी हुई साजिश के तहत सदन की कार्यवाही से गैरहाजिर हैं। अध्यक्ष महोदय, वे बाहर लौबी में बैठे हुए हैं, उनकी अन्दर आने की हिम्मत नहीं है। अध्यक्ष महोदय, प्रकाश सिंह बादल पंजाब में कहते हैं कि हम सैक्शन 5 को हटा देंगे और हमारे विपक्ष के साथी उनका समर्थन करते हैं। अब वे एस०वाई०एल० के बारे में और हरियाणा के हितों के बारे में सदन में क्या बात करेंगे ? क्या वे हरियाणा में सिक्ख भाईयों की बात करेंगे ? उनके दिलों में जनहित के लिए और हरियाणा के हितों के लिए कोई बात ही नहीं है। अध्यक्ष महोदय, जैसा कि मैंने कहा था कि यह प्रस्ताव हमारे घोषणा पत्र में भी था और जब हमारी सरकार बनी थी तो हमने सिक्ख भाईयों से अपने इस वायदे को पूरा करने की बात भी कही थी। अध्यक्ष महोदय, मैं पिछले दिनों अमृतसर गया था और वहां पर एस०जी०पी०सी० की अध्यक्षा बीबी जागीर कौर भी हाजिर थीं। वहां पर मुझे पत्रकार भी मिले थे। उन्होंने बीबी जागीर कौर की उपस्थिति में मुझ से सवाल पूछा था कि आप हरियाणा में एस०जी०पी०सी० अलग से बनाएंगे तो मैंने उनको एक ही जवाब दिया था कि मेरे हरियाणा के सिक्ख भाई जो कहेंगे हम उनकी भावनाओं की कदर करेंगे। यह उनका फैसला है और इसमें मेरा कोई दखल नहीं है। मैं किसी के धार्मिक काम में दखल देने वाला नहीं हूं लेकिन उनकी भावनाओं की कदर करना हमारा फर्ज है। हो सकता

[श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा]

है कि बीबी जागीर कौर को यह बात अच्छी नहीं लगी होगी क्योंकि शायद वे इसका विरोध कर रही थी। अध्यक्ष महोदय, व्यक्तिगत तौर पर मैं चाहता हूं और बाकी लोग भी चाहते हैं कि हरियाणा में अलग से एस०जी०पी०सी० बननी चाहिए। अध्यक्ष महोदय, हमने इनकी भावना को देखते हुए सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया हुआ है हमनें इस कमेटी का गठन इसलिए किया हुआ है ताकि हरियाणा प्रदेश के सिक्ख भाईयों की भावनाओं का पता चल सके। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन में कहना चाहूंगा कि चट्ठा साहब की अभी रिपोर्ट नहीं आई है। रिपोर्ट आते ही सरकार उस रिपोर्ट पर एप्रोप्रिएट कदम उठाएगी ताकि हमारे सिक्ख भाईयों की भावनाओं की कदर हो सके। धन्यवाद।

श्री निर्मल सिंह : स्पीकर सर, इस प्रस्ताव पर बहुत से साथियों ने अपने विचार सदन में रखे । आदरणीय मुख्यमंत्री जी, चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी, रणदीप सिंह सुरजेवाला जी, खरैती लाल जी, मक्कड़ साहब, कर्ण सिंह दलाल, शमशेर सिंह सुरजेवाला जी तकरीबन 15 मैम्बर्ज इस प्रस्ताव पर बोले हैं। मैं आपके माध्यम से सभी का धन्यवाद करता हूं। इस चर्चा के दौरान सदन में बहुत सी बातों पर प्रकाश डाला गया है। गुरूओं की शिक्षाओं पर भी प्रकाश डाला गया है। जिनको हम भूल गए थे। इस पर चर्चा करते हुए हमारी सबकी राय सामने आ गई है कि हरियाणा के सिक्ख भाईयों के लिए अलग से एस०जी०पी०सी० बनाई जाए। इसके साथ ही हरियाणा की जनता को भी पता चला गया है कि ओम प्रकाश चौटाला और उनके सदस्य इस विषय में बोलने की बजाए सदन से बाहर चले गए हैं। यह बात भी हरियाणा के इतिहास में जुड़ गई है।

श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला : चौधरी निर्मल सिंह जी, वे सदन के दरवाजे के बाहर बैठे हुए हैं और चाय व समोसे खा रहे हैं। उनकी हिम्मत नहीं है कि वे अन्दर आकर इस विषय में कुछ कह सकें।

श्री निर्मल सिंह : स्पीकर सर, मैं आपकी इजाजत से कहना चाहता हूं कि.....

श्री अध्यक्ष : चौधरी साहब, आप बैठें। आप नैकस्ट टाईम कन्टीन्यू करेंगे। Now, the House stands adjourned till 9.30 A.M., tomorrow, the 16th March, 2007.

*13.30 hrs. (The Sabha then *adjourned till 9.30 A.M. tomorrow on Friday, the 16th March, 2007).

42905—H.V.S.—H.G.P., Chd.

Haryana Vidhan Sabha Secretariat Chandigarh LIBRARY